Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – XIII Issue – IV July – August 2024

मधुकर सिंह के साहित्य में मानवीयता

मार्गदर्शक
डॉ. रविंद्रकुमार शिरसाट
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती

शोध छात्र
श्री. नितीन मधुकर बोडखे

प्रस्तावना

समांतर कहानी आंदोलन के एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में मधुकर सिंह को जाना जाता है। दलित- शोषित तथा वंचितो के उत्पीडन को विमर्श के रूप मे उनके कथाओं-उपन्यासों में देखा जाता है। इनके कथाओं उपन्यासों में दलित-पिछडो के प्रति की उनकी संवेदनशीलता एवं मानवीयता को स्पष्ट देखा जा सकता है। मधुकर सिंह का जीवन अभाव तथा संघर्ष में ही बिता है। इस संघर्षरत जीवन में कठोर यातनाएँ उन्होंने स्वयं भोगी है। यही वजह है कि उनकी कहानियाँ हृदयस्पर्शी तथा प्रामाणिकता की कसौटी पर सही ठहरती है।

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में एक दलित परिवार में मधुकर सिंहजी का जन्म २ जनवरी, १९३४ इ. स. में हुआ। हिन्दी कथा साहित्य में दलित कथाकार तथा उपन्यासकार के रूप में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वर्णवादी व्यवस्था से ग्रसित इस समाज व्यवस्था की अमानवीयता को उन्होने स्वयं भोगा है, जिसे अपने उपन्यासों-कथाओं मे यथार्थ अभिव्यक्ति दी है। हिन्दी के साथ साथ मराठी भाषा में भी उनको महारथ हासिल थी। यही वजह है कि उनके साहित्य में महात्मा फुले के विचारों को देखा जाता है। उनका समग्र जीवन उनकी कथाओं तथा उपन्यासों में बिखरा मिलता है।

Global Online Electronic International Interdicipilinary Research Journal's licensed *Based on a work at http://www.goeiirj.com*

मधुकर सिंह के कथा साहित्य में व्यक्त मानवीयता

मनुष्य जीवन में व्याप्त समस्याओं के निराकरण करने तथा विश्वशांती बरकरार रखने की दिशा में अनेकों महापुरूष तथा पैगंबर इस धरती पर अवतारित हुए, जिन्होंने अपने विचारों के अनुकूल धर्म की स्थापना की और धर्म संस्थापक कहलाए। बाह्यडंबरो की कम अधिकता इनमे अवश्य मिल जाती है किन्तु सभी धर्म शांति, अहिंसा, सत्य तथा बंधुभाव आदि आधारभूत तत्त्वों से परिपूर्ण दिखाई देते है। यह तत्व मनुष्यता को स्थापित करने वाले होने से सभी थर्म मनुष्यता की नींव पर खड़े है ऐसा कहा जा सकता है।

मनुष्यता को अंग्रेजी में 'ह्युमॅनीटी' कहा जाता है। सहानुभूति, उदारता, दानशुरता आदि मनुष्यता के दर्शक या स्थायी तत्त्व मनुष्य को अन्य पशुओं से भिन्न करते है क्योंकि पशु तो अपने लिए जीते है, मनुष्य उससे जुडे परिवार, समाज, राष्ट्र आदि के लिए जीता है। जिस मनुष्य में हिंसा वृत्ति होती है, उसमे किसी के प्रति सहानुभूति या उदारता नही होती। उसे समाज पशुत्व' की श्रेणी में रख देता है। इन्ही व्यापक तत्त्वों से परिपूर्ण मनुष्यता से विश्व को एक कुटुंब की संकल्पना में ले

जाने की दिशा में साहित्यिक अपना साहित्य सृजन करता है, जिनमे उपन्यासकार, कहानीकार मधुकर सिंहजी का योगदान सराहनीय माना जाता है।

सामान्यतः पाया जाता है कि पारिवारिक जिम्मेदारियों में बूरी तरह से जकडे जाने के कारण मनुष्य में आत्मकेंद्री प्रवृत्ति बलवती हो चली है। आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, स्वार्थों से घिरे मनुष्य या विशिष्ट एक समाज किस तरह अन्यों के लिए विघातक कार्य करते है, इसके परिणामों को झेलनेवालों की मनोदशा, अवस्था किस तरह की हो जाती है इसको मानवीय दृष्टी से लेखक मधुकर सिंहजी के कथा साहित्य में देखा जा सकता है। समाज के किसी एक व्यक्ति या वर्गद्वारा अन्य सामाजिक घटकों पर किए जानेवाले शोषण को विविधांगी रूपों में इनके कथाविश्व में देखा जाता है। पुंजीवादी वर्ग तथा सामान्य किसानों के बीच की यह शोषक-शोषित की अमानवीय परंपरा आजाद भारत में आज भी विशेषत: ग्रामीण क्षेत्रों में पायी जाती है, जिसे मधुकर सिंह ने अपने प्रथम उपन्यास 'सबसे बडा छल' (१९७५) में विस्तार दिया है। किसानों के साथ हरित क्रान्ती के नाम पर किस तरह से पुंजीपतियों ने अन्याय किया इसे स्पष्ट करते हुए वह लिखते है, "भूमि की हदबंदी केवल मृगतृष्णा (मृगजल) है। कोई भी सरकार सच्चे दिल से इसके लिए उतारू नही है। अभी तक जो भी नियम बने है, गरिबों को चूसने के लिए बनाए गये है। हरित क्रांति से फायदा बड़े किसानों को छौडकर किसे हुआ हे ?"[१]

वर्तमान समय में कुछ हद तक दलित समाज ने प्रगती अवश्य कर ली है, किन्तु अपेक्षित लक्ष अभीतक साध्य नही हो सका है। आर्थिक संपन्न दलित स्वयं को उच्चवर्गीय मानने लगे है तथा आत्मकेंद्रि हो गये है।समाज के प्रति के अपने उत्तरदायित्व से मुखर रहे है। आर्थिक अभाव के कारण आज भी बडी संख्या में दलित अनेक यातनाओं से गुजर रहे है। दलितों की इस पीडा तथा वेदना को मधुकर सिंहजी के साहित्य में देखा जा सकता है। इन दलितों में व्याप्त इस वर्गीय मुक्ति की समस्या को उन्होने अपनी कथाओं, उपन्यासों के केंद्र में रखा है। डॉ. दिव्या राणी ने अपने संशोधन के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि, "उनकी कहानियों और उपन्यासों में दलितों की सामाजिक, आर्थिक मुक्ति का सवाल जमीन पर उनके अधिकार के आंदोलन से अभिन्न रूप से जुडा हुआ नजर आता है।"[२] यही वजह है कि उनके कथा के नायक भूमिहीन या अल्पभूधारक किसान तथा मजदुरी करनेवाले खेतीहर ही रहे है। दलित वर्ग से जुड़े नेता, मंत्री, उच्चपदस्थ दलित कर्मी आदि का वर्णन प्रसंगो के अनुरूप अंशतः आया है। दलित मजदुरों की दुरावस्था को उनके संषर्घ को उन्होने अंत्यत मार्मिकता से अभिव्यक्ति दि है। जमिनदारों के खेतों में कार्यरत मजदुरों को अपने श्रम का पूर्णरूप से श्रमिक तक नहीं मिलता है और वह मांगने की हिंमत तक इन मजदुरों में नही होती है। इनकी विवशता को 'लहु पुकारे आदमी' इस काहानी में व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है, "मजुरी मांगने की सजा यहा बडी भयानक है। बड़े किसानों के लोग-बाग थाना कचहरी में भरे पड़े है। नक्सली कहकर जेल में ठुसवा देते है।"[३]

मजदुरों के प्रति की जमीनदार वर्ग की अमानुषता का यह भयावह सत्य है, जिसे आज भी नकारा नहीं जा सकता ।जमिनदारों की इस अमानुषता में सरकारी कर्मी और पुलिस भी संम्मिलित रहते है। इनका आपस में गठबंधन होने से ये एक दुसरे के सहायक होते है, जिसमें किसानो-मजदुरों का दोहरा शोषण किया जाता रहा है। पुलिस जमिनदारों-पूंजीपतियों के ही पक्ष में कार्य को अंजाम देते है। इनके खिलाफ आवाज उठाने वाले को पुलिस की अमानुषता का शिकार होना पडता है, जिसका चित्रण सिंहजी की कथाओं में बार बार आया है। 'पहली मुक्ती' कहानी में जमीनदार अपने असामियों का अमानुषता से शोषण करता है और विरोध में जाने वालों को पुलिस को कहकर पकडवा देता है। वह कहता है, "पुलिस

बडी इमानदारी से हमारे साथ है। पकडकर बड़ी मार मारती है।"[४] इन दलितों को प्रताडित करने में पुलिसकर्मी उनके प्रति इतना घृणास्पद व्यवहार करते है की जिसमे मानवीयता का कोई अंश दिखाई नही देता।

बिहार के 'धरहरा आरा' नगरपालिका की हद में आनेवाले भोजपुर गांव में वे बरसो से रह रहे है। इस गाँव में सवर्ण हिन्दू, मुस्लिम, गैर-मुस्लिम तथा दलित किसान, मजदूर आदि सभी रहते है। वैसे तो मधुकर सिंह का जन्मस्थान 'मिदनापूर' है किन्तू १९४०-१९४२ इ. सन. के आसपास वहाँ महाभयंकर भूकंप आने के बाद वे बिहार के 'भोजपुर' में माँ के साथ चले गए और वहीं के हो कर रह गए। इस गाँव में रहने वाले ज्यादातर लोग कृषि मजदूर या अल्पभूधारक किसान ही थे।

मधुकर सिंहजी की कथाओं तथा उपन्यासों में इस वर्ग के प्रति मानवीयता का दृष्टीकोण स्पष्ट दिखाई देता है। आजादी के बाद हामारे देश में शिक्षित तथा संवेदनशील कहे जानेवाली जिस पिढी का उगम हुआ उनमें मधुकर सिंहजी का नाम सर्वोपरी आता है। अपने गाँव तथा गाँव के मजदूर किसानों से मधुकर सिंहजी को इतना लगाव रहा है कि आगे इतनी कामयाबी पाकर भी वे शहर में जाकर नही बसे। इनकी तुलना प्रेमचंद तथा मैथिलीशरण गुप्त से करते हुए डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय लिखते है कि, "श्री मधुकरजी ने गाँव कभी नही छोडा। पहले तो उनकी मजबुरी थी, पर अब इतने प्रसिद्ध हो जाने पर वे शहर जाकर रह सकते है, किन्तु वे गाँव मे रहे, हार नही मान रहे है। यहाँ तक की उनके चाचा भी उन्हे सताने में लगे रहै।"[५]

मधुकर सिंहजी की मानवियता के मूल उनके विचारों में है। उनकी दृष्टि बुद्धी प्रामाण्यतावादी और वैज्ञानिक होने से अंधविश्वास, भाग्यवाद तथा धार्मिक आडंबरों को वे नही मानते। समता, स्वातंत्र्य तथा बंधु-भाव आदि का समर्थन उनके व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व में 'यथा कृती तथा वृति' की तरह पाया जाता है। जयशंकर प्रसाद ने ठीक ही लिखा है की, 'मनुष्य साधारण धर्म से पशु है, विचारशील होने पर वह मनुष्य बनता है और निस्वार्थ कर्मउसे देवता बना देते हैं।' मधुकरजी का साहित्य यह सोच पैदा कर देता है, जिससे पाठको के मन में सदाचरण तथा मनुष्यता की भावना जागृत होती है।

लेखक वह महान व्यक्ति होता है, जो अपनी अंतःचेतना से प्रेरित होकर मानवता, बंधुता एंव सहिष्णुता की दृष्टि से प्रतिष्ठामूलक कार्य करता है। डॉ. शोभा ने अपने अनुसंधान में लिखा है--"कोई भी लेखक अपने समकालीन समाज में उन जड मान्यताओं और स्थूल आचारो का विरोध करेगा, जो समाज की प्रगति, समृद्धि और स्वास्थ्य के विकास में बाधक होते हैं।"[६]

हिन्दी कथा साहित्य तथा उपन्यास साहित्य दो प्रवृत्तियों को लेकर सामने आता है। एक प्रवृत्ति वह है जिसने प्राचीन वर्णव्यवस्था, परंपरा, मूल्य तथा रूढियों को उचित माना है तथा उनका समर्थन किया है। वही दूसरी प्रवृत्ति उनको अमान्य कर निरर्थक तथा समाज के लिए अनुपयोगी मानती है। दलित साहित्यकार मधुकर सिंह समाज के उस वर्ग के लिए मानवियता दिखाना चाहते है, जिसे वर्णवादी व्यवस्था ने सदियों से बहिष्कृत कर रखा है। स्वातंत्र्य, समता, बुधुता से वंचित कर उनके प्रति घृणाभाव रखा है। इसी अमानवीयता को लेखक सद्भावना में परिवर्तीत करने की कामना करते दिखाई देते है।

इस दृष्टि से मधुकर सिंहजी का कथात्मक साहित्य मानवतावादी ठहरता है। साहित्यकार की मानवीयता को स्पष्ट करते हुए विख्यात आलोचक डॉ. सुरेश बत्रा लिखते है, 'जब वर्गवैषम्य उस (विशिष्ट) समाज को पंगु बना दे, परिस्थितियाँ इन्सान को साथनहीन, स्वार्थहीन बना दे, तब पाप-पुण्य की सीमा रेखा से परे एक संवेदनशील, आदर्शवादी तथा

मानवताप्रिय साहित्यकार बौद्धिक चेतना से झकझोर उठता है।"[७] डॉ. बत्राजी की इस उक्ति को नजर में रखते एह मधुकर सिंह के कथा साहित्य को देखने पर यह कहा जा सकता है कि वह इस कसौटी पर शतप्रतिशत उतरते है।

वर्तमान में मधुकर सिंहजी को हिन्दी साहित्य में कथाकार तथा उपन्यासकार के रूप में भले ही प्रतिष्ठा हसिल हो गई है किन्तु आरंभिक स्तर पर वे एक कवि भी रहे है। उनका कवि-गीतकार से कथाकार-उपन्यासकार यह सफर काफि लंबा रहा है। इस संदर्भ में वह कहते है कि, "संभवतः इसी (बचपन में सुने गए माँ के गीत) से प्रभावित होने से मुझे भोजपुरी लोक कथाओं और लोक-गीतों की ओर आकृष्ट किया और मै भोजपुरी का कवि-गीतकार बन गया।"[८] गीतकार के रूप में भी उन्हे काफि सराहना मिली किन्तु मानवीयता की भावना से परिपूर्ण मधुकर सिंह को कवि-गीतकारिता में वह कॅनवास अधुरा लगा और वह अपने मन की बातों को विस्तार देने की ओर ऊन्मुख होते दिखाई देते है। कथा-उपन्यासों के माध्यम से ही इसे विस्तार देना उन्हे स्वाभाविक लगा होगा तभी तो वे अमीर होने के एक बने बनाए रास्ते से हटकर कहानी तथा उपन्यास लेखन की ओर मुड गए होंगे इस संभावना को नकारा नहीं जा सकता है।

मधुकर सिंहजी की कहानियाँ अंधकारमय परिवेश में मनुष्य को सजग करनेवाली कहानियाँ ठहरती है। वर्तमान में मनुष्यता केवल भीतर की मनोदशा तक सीमित सी हो चली है माइकल जैक्सन की टोपी की तरह सी लगती है वह। मधुकर सिंहजी तभी तो इस टोपी को भुवन के माथे से उतारकर तलैया में डुबो देना चाहते है जिसे कथा के पात्र हरिचरण के माध्यम से वे अंजाम भी देते है।

प्रस्थापितों से भी मधुकर सिंह के प्रति के अमानवीय व्यवहार हुए है किन्तु मधुकर सिंहजी उनके प्रति भी समर्पन भाव ही रखते दिखाई देतेहैं। उनकी मानवीयता की उदारता के दर्शन हमे उन्हीकी इस उक्ति मे हो सकते है जो उन्होने 'माइकल जैक्सन की टोपी' कथासंग्रह के समर्पन में कही है वे इस समर्पन भाव में लिखते है, "यहॉ से माइकल जैक्सन की टोपी' कहानी इसलिए लौटा दी कि इसकी 'मनतुरनी बुआ' उत्तर आधुनिकता की भाषा कैसे और कहाँ बोलती है।" प्रस्तापितों की अवहेलना को भी शिरोधार्य समझने वाले मधुकर सिंहजी की मानवीयता की अवधारणा को समझा जा सकता है।"[९]

आस्था एव प्रखर आशावाद ?

मधुकर सिंहजी के मन के आक्रोश को उनके पात्रो के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है। समाज संबंधित हर जगह प्रस्तापितो का बोलबाला रहता है। यहाँ तक कि शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी वर्ण तथा वर्ग के आधार पर योग्यता-अयोग्यता को निश्चित किया जाता है। बिहार के सिरीपुर गाँव में रहनेवाली मुसहर 'इस जनजाती के साथ होने वाले अमानुषताके व्यववहार को लेखक ने 'लहू पुकारे आदमी' इस कहानी में नगीनाराम मुसहर के माध्यम से स्पष्ट किया है। "अपने यहाँ मुसहर से छोटी कोई जाति नही होती है। सुअर को और मुसहर को कोई ऐसा जंतु नही समझा जाता, जिस पर दया की जाए। तमाम जातियों को उस पर रोब गाँठने का हक है। दोनो की काठी एक तरह की है। गाँव के लोग सामान ढोने का काम बैल और मुसहर से लेते है।"[१०]नगीना अपने गाँव इनके हालातो से वाकिफ है फिर भी जिले के महाविद्यालय में पढाई कर रहा है। गाँव का एक उच्चवर्णीय लडका उसी की कक्षा में पढता है। दोनो में दोस्ती होती है। 'युनिवर्सिटी में हमेशा (उच्च) जाती का लडका फर्स्ट आता है, पढकर फर्स्ट क्लास आने वाले का जमाना नही है. अपनी जाति का हेड तो कभी हो ही नही सकता है।अपने बारे में भैरव (उच्चवर्णीय दोस्त) की तरह कल्पना करने का युग कब आएगा ?"[११]

यहाँ शिक्षा क्षेत्र के हालातों को बयान करते हुए इस अमानवीयता के अंत की कामना लेखक करते दिखाई देते है।मधुकर सिंहजी अपने पाठकों को आशावादी दृष्टि देना चाहते है। उन्हे विश्वास है कि हम दलितो-पिछडों का भी जमाना आएगा। 'गर्दिश के दिन' में इस ओर संकेत देते हुए वे कहते है कि छह बच्चों, पत्नी और माँ के साथ तंगदिली नौकरी में जी लेने के बावजूद मुझे भी अपने ही जैसे लोगों की तरह विश्वास है कि एक दिन हमारे भी जमाने आएँगे।

संदर्भः

१) सिंह मधुकर 'सबसे बडा छल' वाणी प्रकाशन, पटना नयी दिल्ली १९७५, (प्र.संस्करण) पृ-१२९दिल्ली, प्रथम संस्करण २०१९, पृ. १२
२) डॉ. रानी दिव्या-'मधुकर सिंह के कथा-साहित्य में सामाजिक चेतना' के. टी. एस. पब्लिकेशन्स, विजय पार्क,
३) सिंह मधुकर 'लहू पुकारे आदमी' आचार्य प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. ३ ३
४) सिंह मधुकर 'दस प्रतिनिधी कहानिया' किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, २०१३. पृ-२०
५) डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय 'मधुकर सिंहः मनन और मुल्यांकन' पृ-१७०
६) डॉ. शोभा-'अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना' पृ-भमिका से
७) डॉ. बत्रा सुरेश 'अमृतलाल नागरः व्यक्तित्त्व-कृतित्त्व एवं सिद्धांत' पृ-५
८) डॉ. नवले संजय, 'उपान्यासकार मधुकर सिंह' विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण-२००४, पृ-२०
९) सिंह मधुकर 'माइकल जैक्सन की टोपी' हिमाचल तथा सरस्वती पुस्तक भांडार, गांधी नगर, दिल्ली. प्रथमसंस्करण-१९९८, पृ-समर्पण से.
१०) मधुकर सिंह-'पहली मुक्ति' क्षितिज प्रकाशन, नविन शहादरा, दिल्ली, २०१३, पृ-३१
११) वही-पृ-३१